



# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 32]

नई दिल्ली, शनिवार, अगस्त 11, 1984 (श्रावण 20, 1906)

No. 32] NEW DELHI, SATURDAY, 11 AUGUST, 1984 (SRAVAN 20, 1906)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या वी जाती है जिससे कि यह अलग संकालन के रूप में रखा जा सके।

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate Compilation.)

भाग III—खण्ड 4

(PART III—SECTION 4)

विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिसमें कि आदेश, विज्ञापन और सूचनाएं सम्मिलित हैं

[Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies]

कर्मचारी राज्य बीमा नियम

नई दिल्ली, दिनांक 27 जुलाई 1984

सं. एक्स-11/14/20/82-यो० एवं वि०—कर्मचारी राज्य बीमा (सामान्य) विनियम, 1950 के विनियम 5 के उप-विनियम (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए महानियंदेशक ने निश्चय किया है कि राजस्थान राज्य की अधिसूचना मंख्या एफ 1 (14) (20) श्रम/ई० एस० आई०/80 दिनांक 15-2-84 जो कि कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम, 1948 की धारा 1 की उपधारा (5) के अंतर्गत अधिनियम के उपबंधों का उन स्थापनाओं पर विस्तार करने के लिये जारी किया गया था जो कि अधिसूचना में निर्दिष्ट है तथा उन स्थापनाओं में वर्ण “क” “ब्र” तथा “ग” के लिये प्रथम अंशदान एवं प्रथम लाभ अवधियाँ नियम शिवम 3-3-1984 की मध्य रात्रि को बीमा योग्य रोजगार में लगे व्यक्तियों 1-189 GI/84

के लिए प्रारम्भ व समाप्त होगी जैसा निम्न सूची में दिया गया है :—

वर्ण	प्रथम अंशदान अवधि	प्रथम लाभ अवधि
जिस मध्य रात्रि को प्रारम्भ होती है।	जिस मध्य रात्रि को समाप्त होती है।	जिस मध्य रात्रि को प्रारंभ होती है।
क.	3-3-84	28-7-84
ख.	3-3-84	29-9-84
ग.	3-3-84	26-5-84
		1-12-84
		27-4-85
		1-12-84
		29-6-85
		1-12-84
		23-2-85

दिनांक 28 जुलाई 1984

सं. एक्स-11/14/20/82-यो० एवं वि०—कर्मचारी राज्य बीमा (सामान्य) विनियम, 1950 के विनियम 5 के उप-विनियम-(i) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए महानियंदेशक ने निश्चय किया है कि राजस्थान राज्य की अधिसूचना मंख्या एफ० 1(14)(20) श्रम/ई० एस० आई०/80

(2305)

दिनांक 7-3-1984 जो कि कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम, 1948 की धारा 1 को उपधारा (5) के अन्तर्गत अधिनियम के उपबंधों का उन स्थापनाओं पर विस्तार करने के लिए जारी किया गया था जो कि अधिसूचना में निर्दिष्ट है तथा उन स्थापनाओं में वर्ग "क" "ख" तथा "ग" के लिए प्रथम अंशदान एवं प्रथम लाभ अवधियां नियत दिवस 31-3-1984 की मध्य रात्रि को बीमा योग्य रोजगार में लगे व्यक्तियों के लिए प्रारम्भ व समाप्त होगी जैसा निम्न सूची में दिया गया है :—

वर्ग	प्रथम अंशदान अवधि	प्रथम लाभ अवधि
जिस मध्य रात्रि को प्रारम्भ होती है।	जिस मध्य रात्रि को है।	जिस मध्य रात्रि को प्रारंभ होती है।
क.	31-3-84	28-7-84
ख.	31-3-84	29-9-84
ग.	31-3-84	26-5-84
	29-12-84	29-12-84
	27-4-85	29-6-85
	23-2-85	

सं० एस०-11/14/20/82-य०० एवं वि०—कर्मचारी राज्य बीमा (सामान्य) विनियम, 1950 के विनियम 5 के उप-विनियम (1) द्वारा प्रदत्त व्यक्तियों का प्रयोग करने हुए महानिदेशक ने निष्चय किया है कि राजस्थान राज्य की अधिसूचना संख्या एफ० 1(14)(20) श्रम/ई० एस० आई०/80 दिनांक 15-2-1984 जो कि कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम 1948 की धारा 1 को उपधारा (5) के अन्तर्गत अधिनियम के उपबंधों का उन स्थापनाओं पर विस्तार करने के लिए जारी किया गया था जो कि अधिसूचना में निर्दिष्ट है तथा उन स्थापनाओं में वर्ग "क", "ख" तथा "ग" के लिए प्रथम अंशदान एवं प्रथम लाभ अवधियां नियत दिवस 24-3-1984 की मध्य रात्रि को बीमा योग्य रोजगार में लगे व्यक्तियों के लिए प्रारम्भ व समाप्त होगी जैसा निम्न सूची में दिया गया है :—

वर्ग	प्रथम अंशदान अवधि	प्रथम लाभ अवधि
जिस मध्य रात्रि को प्रारम्भ होती है।	जिस मध्य रात्रि को है।	जिस मध्य रात्रि को होती है।
क.	24-3-84	28-7-84
ख.	24-3-84	29-9-84
ग.	24-3-84	26-5-84
	22-12-84	22-12-84
	27-4-85	29-6-85
	23-2-85	

एच० के० आहुजा,  
निदेशक (योजना एवं विकास)

### कर्मचारी राज्य बीमा नियम कर्नाटका

#### गुटिंगल

सं० 53 बी० 34-13-6-83-समन्वय—इस कायलिय की समसंख्यक अधिसूचना के क्रम में दिनांक 11-2-1984 के भारत राजवंश के भाग III अनुभाग 4 में श्री आर० बी० स्वादी, सदस्य, स्थानीय समिति, हुबली, के नाम के सामने निम्न-निखित शुद्धिकरण मान लिया जाए।

श्री आर० बी० स्वादी,

महा सचिव,

किलोस्टर इलेक्ट्रिक कम्पनी कर्मचारी संघ,  
हुबली ।

आदेश द्वारा,

बी० के० शमचंद्र राव  
क्षेत्रीय निदेशक।

बिहार सरकार,  
राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग

#### सूचना

सरोकार रखने वाले सभी लोगों के लिए

1. चूंकि भूमिहार जाति की जेथरिया शास्त्रा के महाराजा हरेन्द्र किशोर सिंह जो यथा-ज्ञात ब्रेतिया इस्टेट में सम्पत्तियों के अंतिम पुरुष धारक थे, 26 मार्च, 1893 को निस्संतान और निर्वैसीयत मर गए, और

2. चूंकि उपर्युक्त महाराजा हरेन्द्र किशोर सिंह का देहान्त होने पर उनकी ज्येष्ठ विधवा महारानी शिवरत्न कुँश्वर 24 मार्च, 1896 को अपनी मृत्यु होने तक उक्त ब्रेतिया इस्टेट को परिसीमित स्वामी के रूप में तब तक धारित किए रहीं जब तक उन्हें उक्त सम्पत्ति का प्रबंध करने में अक्षम नहीं घोषित कर दिया गया, और

3. चूंकि उपर्युक्त महारानी शिवरत्न कुँश्वर का देहान्त होने पर उपर्युक्त महाराजा हरेन्द्र सिंह की कनिष्ठ विधवा महारानी जानकी कुँश्वर अब ब्रेतिया इस्टेट को परिसीमित स्वामी के रूप में तब तक धारित किए रहीं जब तक उन्हें उक्त सम्पत्ति का प्रबंध करने में अक्षम नहीं घोषित कर दिया गया, और

4. चूंकि उक्त ब्रेतिया इस्टेट का प्रबंध करने में महारानी जानकी कुँश्वर अक्षम है इस आशय की उक्त घोषणा होने पर एवं उसके परिणामस्वरूप बिहार तथा उत्तर प्रदेश स्थित प्रतिपाल्य-अधिकारणों (कोर्ट्स आफ वाड्स) ने, प्रतिपाल्य अधिकरण अधिनियम, 1879 के अधीन, अपने-अपने राज्य के भीतर अवस्थित उक्त ब्रेतिया इस्टेट का प्रबंध वर्ष-1897 में अपने हाथ में ले लिया, और

5. चूंकि महारानी जानकी कुँश्वर को वर्ष 1911 में विकृतचित घोषित कर दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप उनका स्वीकृत और वैयक्तिक सम्पत्तियां भी, प्रतिपाल्य अधिकरण अधिनियम, 1879 के उपबंधों के अधीन प्रतिपाल्य अधिकारण द्वारा अपने अधिकार में ले ली गईं, और

6. चूंकि उपर्युक्त महारानी जानकी कुंग्रेर 27 नवम्बर, 1954 को निस्संतान और निर्वसीयत तथा बिना किसी वैध वारिस के मर गई और

7. चूंकि उपर्युक्त महारानी जानकी कुंग्रेर का देहान्त होने पर उनके एवं उपर्युक्त महाराजा हरेन्द्र किशोर सिंह के वारिसों का नितान्त अभाव हो गया, और

8. चूंकि उपर्युक्त महारानी जानकी कुंग्रेर का देहान्त होने पर उनके एवं उपर्युक्त महाराजा हरेन्द्र किशोर सिंह के वारिसों का नितान्त अभाव हो जाने के कारण, उक्त महारानी जानकी कुंग्रेर का स्वीकृत और वैयक्तिक सम्पत्तियों तथा उक्त बेतिया इस्टेट की सम्पत्तियाँ, जो यथा उपर्युक्त प्रतिपाल्य अधिकारण की अभिरक्षा में थीं, राजगामित्व द्वारा बिहार राज्य में निहित हो गई, और

9. चूंकि अधिकारवान स्वामी की ओर से प्रबंध के लिए प्रतिपाल्य अधिकारण द्वारा धारित उक्त महारानी जानकी कुंग्रेर के स्वीकृत और वैयक्तिक सम्पत्तियों सहित उक्त बेतिया इस्टेट की नियुक्ति को प्रार्थना करते हुए बिहार राज्य ने प्रतिपाल्य अधिकारण अधिनियम, 1879 की धारा-13 के अधीन एक आवेदन प्रतिपाल्य अधिकारण को 6 दिसम्बर, 1954 को इसे आधार पर प्रस्तुत किया कि 27 नवम्बर, 1954 को उपर्युक्त महारानी जानकी कुंग्रेर का देहान्त हो जाने पर वारिसों का नितान्त अभाव हो जाने के कारण उक्त सम्पत्तियाँ राजगामित्व द्वारा बिहार राज्य में निहित हो गई, और

10. चूंकि बिहार राज्य का दिनांक 6 दिसम्बर, 1954 का उक्त आवेदन प्राप्त होने पर इस विषय में बिहार के महाधिकारकों की सुनवाई करने के बाद प्रतिपाल्य-अधिकारण ने आम जनता को तद्विषयक जानकारी देने के लिए राजपत्र (सरकारी गजट) में सूचनाएँ प्रकाशित कर दिया है एवं अपना-अपना दावा हृद से दृढ़ 8 जनवरी, 1955 तक प्रतिपाल्य अधिकारण के समक्ष पेश करें; और

11. चूंकि उक्त सूचना के अनुसार विभिन्न पार्टियों ने या तो स्वर्गीय महाराजा हरेन्द्र किशोर सिंह के निकटतम उत्तराधीनी के रूप में उक्त बेतिया इस्टेट पर अध्यवा, तत्कालीन हिन्दू विधि के अधिन इडिंग द्वारा या उत्तराधिकार द्वारा, स्वर्गीय महारानी जानकी कुंग्रेर द्वारा छोड़े स्वीकृत और वैयक्तिक सम्पत्तियों पर अपना-अपना दावा पेश करते हुए उक्त 8 जनवरी, 1955 तक प्रतिपाल्य अधिकारण में आवेदन दाखिल कर दिए, और

12. चूंकि राजपत्र में प्रकाशित उक्त सूचना के अनुसार जिन पार्टियों ने उक्त बेतिया इस्टेट पर तथा स्वर्गीय महारानी जानकी कुंग्रेर के स्वीकृत और वैयक्तिक सम्पत्तियों पर अपना

दावा-पेश किया था, उन सभीकृत सुनवाई करने के बाद, भारत-पाल्य अधिकारण ने 18 जनवरी, 1955 को पारित एक संकल्प द्वारा इस ग्राम्य का आदेश दिया कि किसी सक्षम सिविल कोर्ट द्वारा इस विवाद का अवधारण होने तक, विवाक्षरस्त सम्पत्तियों का प्रभार यही प्रतिधारित करेगा।

13. चूंकि उक्त दिनांक 18 जनवरी, 1955 के संकल्प के बाद अनेक पार्टियों ने प्रतिपाल्य अधिकारण द्वारा धारित बेतिया इस्टेट और/या स्वीकृत और वैयक्तिक सम्पत्तियों पर अपने स्वामित्व का दावा पेश करते हुए, एवं राजगामित्व द्वारा उक्त सम्पत्तियों के स्वामित्व का दावा पेश करने वाले बिहार राज्य को भी एक पार्टी बनाते हुए, सुसंगत सिविल कोर्टों में बाद फाइल कर दिए, और

14. चूंकि यथा पूर्वोंभित्ति फाइल किए गए समस्त बाद अंतिम रूप से खारिज किए जा चुके हैं, जिनमें वे बाद भी शामिल हैं जो सिविल अपील सं०-४९४ से ४९६/१९७५ में भारत के माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा 20 अप्रैल, 1983 को दिए गए, इस निण्यं द्वारा निपटाएँ जा चुके हैं कि कोई भी दावेदार वारिस नहीं है, एवं राज्य को चाहिए कि राजगामित्व द्वारा हक्क को घोषणा के लिए प्रार्थना करें,

अतः अब बिहार राज्य ने बेतिया इस्टेट की उपर्युक्त सम्पत्तियों तथा स्वर्गीय महारानी जानकी कुंग्रेर की उक्त स्वीकृत और वैयक्तिक सम्पत्तियों पर राजगामित्व द्वारा हक्क हासिल करने की घोषणा के निमित्त बाद फाइल करने का विनिश्चय के अनुसार में, बिहार राज्य सर्वसाधारण की जानकारी के लिए एक दृष्टिकोण यह सूचना प्रकाशित कर रहा है कि प्रस्तावित बाद इस सूचना के प्रकाशन को तटीरीख से छह सप्ताह के भीतर सब-जज, पटना के कोर्ट में फाइल किया जाएगा। जो भी व्यक्ति इस मामले में हितबद्ध और परामर्श प्राप्त हो, वे बिहार राज्य के अभिवाकृता प्रतिवाद करें।

बिहार राज्यपाल के आदेश से,

एस० शरण,

निदेशक, भूमि-लगान-सह-संयुक्त सचिव,  
राजस्व और भूमि सुधार विभाग, बिहार,  
पटना

पटना, दिनांक, 14 अप्रैल, 1984।

#### भारतीय दंतचिकित्सा परिषद

नई दिल्ली, दिनांक 11 जुलाई 1984

क्रमांक डी० ई० 73-८४/१४७४—दंतचिकित्सक अधिनियम 1948 (1948 का 16) की धारा 11 के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए बिहार राज्य सरकार तथा बिहार प्रदेश दंतचिकित्सा परिषद से परामर्श करने के बाद, पटना दंत महाविद्यालय एवं चिकित्सालय, पटना की फैलत

हाईजीनिस्ट योग्यता की कार्योत्तर मान्यता प्रदान करती है।

क्रमांक डी० ई० 73-84/1563—दंतचिकित्सक अधिनियम 1948 (1948 का 16) को धारा 11 के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, आन्ध्र प्रदेश, राज्य सरकार, तथा आन्ध्र प्रदेश दंतचिकित्सा परिषद से परामर्श करने के बाद,

माध्यमिक शिक्षा संस्था आन्ध्र प्रदेश, हैदराबाद, की डेन्टल हाईजीनिस्ट योग्यता की कार्योत्तर मान्यता प्रदान करती है।

डी० एन० चौहान,

सचिव,

भारतीय दंतचिकित्सा परिषद,

नई दिल्ली

### EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION

New Delhi, the 27th July 1984

No. X.11|14|20|82-P&D.—In exercise of the powers conferred by sub-regulation (1) of the Regulation 5 of the Employees' State Insurance (General) Regulations, 1950, the Director General has determined that in the establishments specified in the State Government of Rajasthan Notification No. F. 1(14)(20) Labour|ESI|80 dated 15-2-1984 issued under sub-section (5) of Section 1 of the ESI Act, 1948, extending the provisions of the said Act to those establishments, the first contribution and first benefit periods for Sets 'A', 'B' and 'C' shall begin and end in respect of persons in insurable employment on the appointed day of midnight of 3-3-1984 as indicated in the table given below :—

Set	First contribution period		First benefit period	
	Begins on midnight of	Ends on midnight of	Begins on midnight of	Ends on midnight of
A	3-3-1984	28-7-1984	1-12-1984	27-4-1985
B	3-3-1984	29-9-1984	1-12-1984	29-6-1985
C	3-3-1984	26-5-1984	1-12-1984	23-2-1985

New Delhi, the 28th July 1984

No. X.11|14|20|82-P&D.—In exercise of the powers conferred by sub-regulation (1) of the Regulation 5 of the Employees' State Insurance (General) Regulations, 1950, the Director General has determined that in the establishments specified in the State Government of Rajasthan Notification No. F.1(14)(20) Labour|ESI|80 dated 7-3-1984 issued under sub-section (5) of Section 1 of the ESI Act, 1948, extending the provisions of the said Act to those establishments, the first contribution and first benefit periods for Sets 'A', 'B' and 'C' shall begin and end in respect of persons in insurable employment on the appointed day of midnight of 31-3-1984 as indicated in the table given below :—

Set	First contribution period		First benefit period	
	Begins on midnight of	Ends on midnight of	Begins on midnight of	Ends on midnight of
A	31-3-1984	28-7-1984	29-12-1984	17-4-1985
B	31-3-1984	29-9-1984	29-12-1984	29-6-1985
C	31-3-1984	26-5-1984	29-12-1984	23-2-1985

No. X.11|14|20|82-P&D.—In exercise of the powers conferred by sub-regulation (1) of the Regulation 5 of the Employees' State Insurance (General) Regulations, 1950, the Director General has determined that in the establishments specified in the State Government of Rajasthan Notification No. F.1(14)(20) Labour|ESI|80 dated 15-2-1984 issued under sub-section (5) of Section 1 of the ESI Act, 1948, extending the provisions of the said Act to those establishments, the first contribution and first benefit periods for Sets 'A', 'B' and 'C' shall begin and end in respect of persons in insurable employ-

ment on the appointed day of midnight of 24-3-1984 as indicated in the table given below :—

Set	First contribution period		First benefit period	
	Begins on midnight of	Ends on midnight of	Begins on midnight of	Ends on midnight of
A	24-3-1984	28-7-1984	22-12-1984	27-4-1985
B	24-3-1984	29-9-1984	22-12-1984	29-6-1985
C	24-3-1984	26-5-1984	22-12-1984	23-2-1985

H. K. AHUJA  
Director (PLG. & Dev.)

E. S. I. CORPORATION  
KARNATAKA

### CORRIGENDUM

No. 53. V. 34. 13-6-83-Coord.—In continuation of this office notification of even No. in Part III Section 4 of the Gazette of India dated 11-2-1984, the following corrigendum may be read against the name Sri R. B. Swadi, Member, Local Committee, Hubli.

Sri R. B. Swadi,  
General Secretary,  
Kirloskar Electric Company Employees Union,  
HUBLI.

BY ORDER,  
B. K. RAMACHANDRA RAO  
Regional Director

GOVERNMENT OF BIHAR  
Revenue & Land Reforms Department

### NOTICE

TO WHOSOEVER IT MAY CONCERN

1. WHEREAS Maharaja Harendra Kishore Singh, belonging to the Jetharia sect of Bhumiyar caste was the last male holder of the properties comprised in what is known as the Bettiah Estate, who died issueless and intestate on the 26th of March, 1893 and,

2. WHEREAS upon the death of the aforesaid Maharaja Harendra Kishore Singh, his senior widow Maharani Sheoratan Kuer held the said Bettiah Estate as a limited owner till she died on the 24th of March, 1896 And

3. WHEREAS upon the death of the aforesaid Maharani Sheoratan Kuer the said Bettiah Estate was held by Maharani Janki Kuer, the junior widow of the aforesaid Maharaja Harendra Kishore Singh, as a limited owner until she was declared to be incompetent to manage such property, and,

4. WHEREAS upon and in consequence of the declaration aforesaid to the effect that Maharani Janki Kuer was incompetent to manage the said Bettiah Estate, the Court of Wards

in Bihar and Uttar Pradesh took over the management of the said Bettiah Estate situated within their respective states in the year 1897 under the court of wards Act, 1879; And,

5. WHEREAS the aforesaid Maharani Janki Kuer was declared to be unsound mind in the year 1911 as a result of which her stridhana and personal properties were also taken over by the Court of Wards under the provisions of the court of wards Act, 1879; And,

6. WHEREAS the aforesaid Maharani Janki Kuer died issue less and intestate on the 27th of November 1954 and without any legal heir; And,

7. WHEREAS upon the death of the aforesaid Maharani Janki Kuer there was a total failure of heirs to her and of the aforesaid Maharaja Harendra Kishore Singh; And

8. WHEREAS the stridhana and personal properties of the aforesaid Maharani Janki Kuer and the properties of the said Bettiah Estate which were under the custody of the court of wards as aforesaid vested in the State of Bihar by escheat upon the death of the aforesaid Maharani Janki Kuer because of total failure of heirs to her and to the aforesaid Maharaja Harendra Kishore Singh who was the last male holder of the said Bettiah Estate; And,

9. WHEREAS the State of Bihar made an application on the 6th of December, 1954 to the Court of wards u/s 13 of the Court of wards Act, 1879, praying for the release of the said Bettiah Estate along with the stridhana and personal properties of the aforesaid Maharani Janki Kuer held by the Court of Wards for management on behalf of the rightful owner on the ground that upon the death of the aforesaid Maharani Janki Kuer on the 27th of November, 1954, such properties had vested in the State of Bihar by escheat for reasons of total failure of heirs; And,

10. WHEREAS on receiving the said application dated the 6th of December, 1954 from the State of Bihar and after hearing the Advocate General of Bihar in the matter of Court of Wards published notices in the official gazette giving information regarding the same to the general public and calling upon the interested parties to file their respective claims if any, to the aforesaid Bettiah Estate and to the aforesaid stridhana and personal properties of the late Maharani Janki Kuer before the court of wards latest by 8th of January, 1955 and,

11. WHEREAS several parties filed applications to the court of wards by the aforesaid 8th of January, 1955, in response to the above notice making their respective claims either to the aforesaid Bettiah Estate claiming the same as the nearest reversioner of the late Maharaja Harendra Kishore Singh or to the stridhana and personal properties left by the late Maharani Janki Kuer claiming the same by inheritance or by custom under the then Hindu law, And,

12. WHEREAS after hearing all parties, who had claimed the aforesaid Bettiah Estate and/or the aforesaid stridhana and personal properties of the late Maharani Janki Kuer in response to the aforesaid notice published in the official gazette, the court of wards by a resolution passed on the 18th of January, 1955, made an order to the effect that it will retain

the charge of the disputed properties until the dispute is determined by a competent civil court, And,

13. WHEREAS after the above resolution dated the 18th of January, 1955, a number of parties filed suits in relevant civil courts claiming the ownership of the Bettiah Estate and/or the stridhana and personal properties held by the court of wards impleading the State of Bihar as one of the defendants which had claimed ownership of the said properties by escheat; And,

14. WHEREAS all the suits filed as aforesaid have been finally dismissed including those disposed of by the judgement dated the 10th of April, 1983 passed by the Hon'ble supreme court of India in civil Appeal Nos. 494 to 496 of 1975 holding that none of the claimants were heirs and desiring the State to seek declaration of title by escheat.

NOW THEREFORE the State of Bihar has decided to file a suit for declaration of title by escheat to the aforesaid properties of the Bettiah Estate and to the aforesaid stridhana and personal properties of late Maharani Janki Kuer and in pursuance of its such decision the State of Bihar, hereby, through this Notice gives out for general information that the proposed suit will be filed in the court of sub-judge, Patna within six weeks of the publication of this notice and calls upon any person or persons, if interested and advised to contest the plea of the State of Bihar.

By order of the Governor of Bihar.

S. SHARAN  
Director, Land Rent-cum-Joint Secretary,  
Revenue & Land Reforms Department, Bihar,  
PATNA

Dated at Patna,  
the 14th April, 1984

**DENTAL COUNCIL OF INDIA**  
(Constituted under the Dentists Act 1948)

New Delhi, the 11th July 1984

No. DE. 73-84/1474.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Dentists Act, 1948, (16 of 1948), the Dental Council of India after consulting the State Govt. of Bihar and the Bihar State Dental Council, Patna, hereby accords ex-post-facto recognition to the Dental Hygiene Course Certificate granted by the Patna Dental College & Hospital, Patna.

No. DE. 73-84/1563.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Dentists Act, 1948, (16 of 1948), the Dental Council of India after consulting the State Govt. of Andhra Pradesh and the Andhra Pradesh State Dental Council, Hyderabad, hereby accords ex-post-facto recognition to the Dental Hygiene Course Certificate granted by the Board of Intermediate Education Andhra Pradesh, Hyderabad.

D. N. CHAUHAN,  
Secretary  
Dental Council of India

## Office of the Punjab Wakf Board Ambala Cantt.

## ADDANDA

Dated the 26th July 1984

No. 45 (Gen)/84/6150—Add the following Wakf property in the Gazette of India Part III Section 4 in continuation of the properties already published in the Gazette of India Part III Section 4, October 3, 1970 (Asvna 11, 1892) of District \_\_\_\_\_.

## WAKF RULES

Sl. No.	(i) Name of Wakf	(ii) Location of wakfs		(iii) Details of wakf properties			(iv) Date of year of creation of wakfs	(vi) Gross receipts (vii) Grants received	(viii) Nature of objects of each wakf	(ix) Gross in- come of properties comprised in each wakf	(x) Amount of L.R., cess rates and taxes pay- able in respect of such pro- perty	(xi) Expenses incurred in the realisation or income	(xii) How the wakf is administrated (xiii) Name of Mutwalli	(xiv) Any other particulars (Remarks)
		(a) Districts	(c) Village where situated	(a) Area	(b) Boundaries	(c) Value Rs.								
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	
1.	Greveyard	Bhiwani Bhiwani	Tosham	K. M. 174-14	391	100000/0	Not Known	—	Religious	—	—	Under Manage- ment of Secre- tary Punjab Wakf Board Ambala Cantt as ex-officio Mutwalli.		
2.	Do.	Amritsar Amritsar	Amritsar Sub urban Near Guru Nanak Pura Dhapai Colony	9-13	213	48000/-	Do.	—	Do.	—	—	Do.		
3.	Idgah	Do.	Amritsar Urban Abadi Islamab- ad H. B. No. 387	2-16	32 Min	20000/-	Do.	—	Do.	—	—	Do.		

4. Idgah	Jalandhar Jalandhar	Jalandhar Cantt. Cantt.	1.78 Ac.	Survey No. 283 2513	100000/-	Not Known	—	Religious	—	—	Under Manage- ment of Secre- tary Punjab Wakf Board Ambala Cantt as ex-officio Mutwalli.
5. Masjid	Do.	Jalandhar Near Police Choki No. 4	K.M. 1-8	7298	10000/-	Do.	—	Do.	—	—	Do.
6. Graveyard	Gurdash- Pur	Balewal	33-13	34	35000/-	Do.	—	Do.	—	—	Do.
7.	Do.	Bhatinda Bhatinda	Kotshamir 7-4 8-10 4-3	134-7 655 656 657 658	125000/-	Do.	—	Do.	—	—	Do.
				154-4							

The above items are shown as gairmumkin Graveyard, Masjid, Idgah, in the Jamabandi, hence it is Sunni Wakfs. They have been entered in Kitabul-Aukaf and Register.

K. SHEIKH AHMED  
Secretary,  
Punjab Wakf Board,  
Ambala Cantt.

